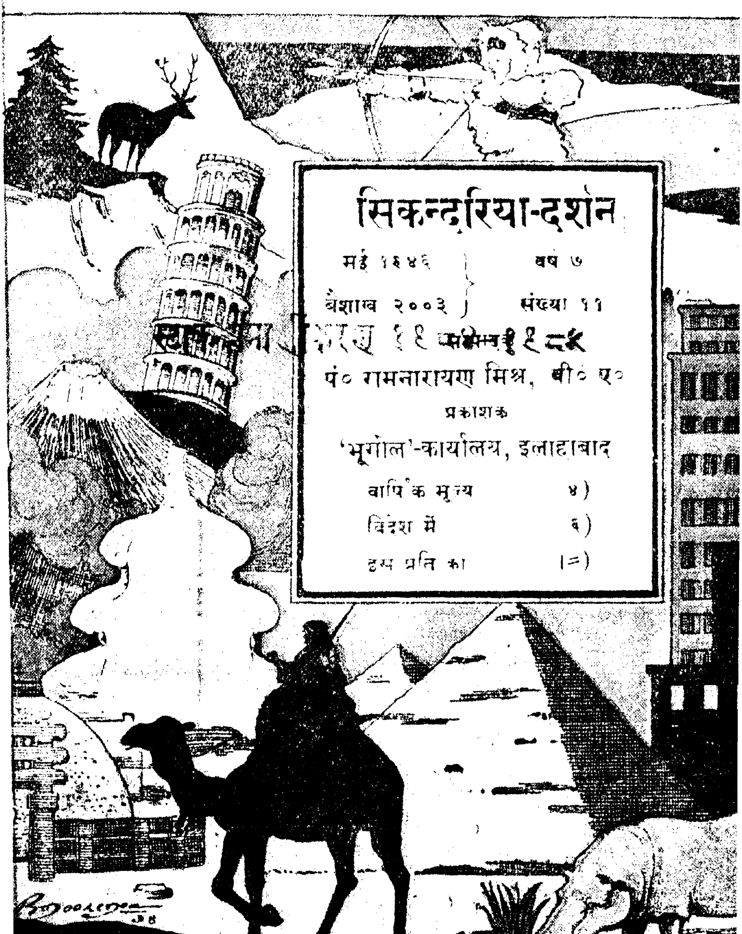
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—७८



सिकन्दरिया-दर्शन

मई १९४६ } वर्ष ७
वैशाख २००३ } संख्या ११

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

संक्षिप्त इतिहास

सिकन्दरिया नगर की नींव सिकन्दर बादशाह ने ३३२ वर्ष ईसा के पूर्व डाली थी। सिकन्दर मसेडोन का प्रसिद्ध राजा था। यह नगर राकोटिस गाँव के स्थान पर बसाया गया था। राकोटिस गांव में फेनीसियन तथा सीरियन मल्लाह रहा करते थे उन्होंने इस गाँव को अपने व्यापार का केन्द्र बना रक्खा था। सिकन्दर ने डिनोक्रेट्स नामक प्रसिद्ध शिल्पकार को नगर के निर्माण कार्य में लगाया था।

लगभग सौ वर्ष के पश्चात् सिकन्दरिया नगर बहुत उन्नति कर गया और भूमध्यसागर का सबसे अधिक सुन्दर नगर तथा सबसे बड़ा बन्दरगाह हो गया।

प्टोलेमी फिलडिल्फस २४५-२४७ (वर्ष ईसा के पूर्व) सिकन्दरिया का राजा रहा। उसने नगर में एक प्रकाश घर बनवाया और उसका नाम फारोस रक्खा। यह प्रकाश घर सफेद संगमरमर का बनाया गया था।

इसकी ऊंचाई ५६० फुट थी और इसके ऊपरी भाग में समुद्री यात्रियों को मार्ग प्रदर्शन करने के लिये सदैव अग्नि जला करती थी। यह प्रकाशघर संसार के सात अद्भुत वस्तुओं में गिना जाता था। अब उसके स्थान पर केट खाड़ी का क़िला स्थित है। इस प्रकाश घर के बनाने में २ लाख पौंड व्यय हुये थे।

सातवीं सताब्दी में अरब लोगों ने मिस्र-विजय किया और फारोस का प्रयोग किया। इस प्रकाश घर का प्रकाश समुद्र में २७ मील तक दिखलाई पड़ती थी। इसमें एक अद्भुत शीशा लगा था जो सूर्य किरणों के तेज को अपना कर दूर तक फेंकता था और लगभग सौ मील तक के जहाज़ों को जला सकता था। यह प्रकाश घर ईसाई देशों के लिये भय का विषय था। इसलिये कुस्तुन्तुनिया के महाराज ने अपने एक विश्वास पात्र व्यक्ति को सिकन्दरिया भेजा। वह दूत बड़ा निपुण था अतः वह खलीफा एल वहीद को अपने वश में करने में समर्थ हो गया। उसने खलीफा को समझाया कि प्रकाश घर के नीचे एक बड़ा खज़ाना गड़ा है। खलीफा ने लालच वश आज्ञा दी कि प्रकाश

घर गिरा दिया जाय। जब लगभग आधा भाग गिरा दिया गया तो अरबों को सन्देह हो गया। उन्होंने गिराने का कार्य रोक दिया और फिर से प्रकाश घर को पूरा करने का प्रयत्न किया पर सफल न हुये। वह अद्भुत शीशे को भी पुनः बनाने में सफल न हुये। १३७५ ई० में भूकम्प से प्रकाश घर का बचा हुआ भाग भी समुद्र में गिर गया।

उमर खलीफा के समय में अमर नामक यवन सेनापति ने ६४० ई० में नगर पर अपना अधिकार किया। नगर का भ्रमण करने पर उसे एक बड़े पुस्तकालय का पता चला। इस पुस्तकालय में २ लाख पुस्तकें थीं यह समस्त पुस्तकें हस्तलिखित थीं और बड़े परिश्रम के साथ प्राचीन देशों से एकत्रित की गई थीं। जब खलीफा उमर को इन पुस्तकों का समाचार प्राप्त हुआ तो उसने आज्ञा भेजी कि यदि ये पुस्तकें कुरान का समर्थन करती हों तो इन्हें नष्ट कर दो क्योंकि इनकी शिक्षा बनावट रूप होगी और यदि कुरान के विरुद्ध हों तो जला दो क्योंकि उनकी शिक्षा हमारा प्रतिरोध करेगी। इतनी अधिक पुस्तकों का

जलाना भी कठिन कार्य था जिनके बाहर निकालने में ६ महीने लग गये थे। यदि यह पुस्तकालय न जलाया गया होता तो इसकी पुस्तकों से इतिहास, विज्ञान और भाषा को बड़ा लाभ होता।

१५१७ ई० में सिकन्दरिया पर तुर्कों ने अपना अधिकार जमाया। वह बहुत समय तक राज्य करते रहे। उसके पश्चात् १७९८ ई० में फ्रान्सीसी सेना जुलाई मास में सिकन्दरिया बन्दरगाह पर उतरी और दूसरे दिन समस्त नगर पर अधिकार कर लिया।

सिकन्दरिया नगर के समीप अबोकिर नामक एक गांव था प्राचीन काल में इस बस्ती को लोग बुकीरिक कहा करते थे। इसी गांव के सामने समुद्र में १७९८ ई० में एडमिरल नेलसन के जहाजी बेड़े के साथ फ्रांसीसी जहाजी बेड़े का घमासान युद्ध हुआ। दो दिन तक घनघोर युद्ध होता रहा। फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा पूर्ण रूप से परास्त हो गया और उसका ओरियन्ट नामक जहाज़ डूब गया। इसी जहाज़ पर फ्रांसीसी झंडा लगा था। इसमें बड़ा धन लदा था। इसी जहाज़ पर कैसाबियानका नामक एक लड़का था जिसने जलती हुई अग्नि में अपने

को आवाहन कर दिया पर अपने स्थान से नहीं डिगा और अपने कार्य पर तत्पर रहा।

२५ जुलाई १७९९ में नेपोलियन बोनापार्ट ने तुर्कों को परास्त किया। मार्च १८०१ ई० में सिकन्दरिया में अंग्रेज़ी सेना उतरी। ८ मार्च को अंग्रेज़ी सेना ने फ्रांसीसी सेना को परास्त किया। जून १८८२ ई० में अरबी पाशा (क्रान्तिकारी नेता) के समय में देश में क्रान्ति होने के कारण पुनः अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी सेनाएँ सिकन्दरिया पहुँचीं। ११ और १२ जुलाई को अंग्रेजी जहाजी बेड़े के अफसर एडमिरल सर ब्यूचैम्प सेम्प ने नगर पर बम्बाज़ी की और क़िले को सत्यानाश कर डाला। नगर के क्रान्तिकारियों ने नगर में आग लगा दी जिससे नगर को ४० लाख पौंड की हानि हुई थी।

३ अगस्त सन् १८०५ ई० को मोहम्मद अली पाशा सिकन्दरिया गये। उन्होंने अपना परिचय जनता को दिया। प्रजा ने उनका स्वागत किया। प्रजा की सहायता से उन्होंने ममलूकवे को सरकार का अंत कर दिया और वर्तमान सरकार की नींव डाली। उसने बहुत से सुधार

किये। उसी के वंश के लोगों का शासन अब भी सिकन्दरिया पर है।

उसका पौत्र इसमाईल पाशा हुआ। उसी के शासन काल में रेलवे का संचार सिकन्दरिया में हुआ और स्वेज नहर निकाली गई। स्माइलिया नगर और केरो के स्माइलिया क्वाटर उसी के समय में बनाए गये। इसमाइल पाशा के समय में मिस्र में बड़ी उन्नति हुई और नहरें तथा सड़कें आदि बनाई गईं।

मिस्र के वर्तमान शासक फुआद प्रथम हैं। आप इसमाइल पाशा के पुत्र हैं। आप भाषा विज्ञान आदि के बड़े प्रेमी हैं। आपके शासन काल में सिकन्दरिया नगर की अच्छी उन्नति हुई है। जब से आप फारोस की गद्दी पर आसीन हुये मिस्र का दिन प्रतिदिन उत्थान हो रहा है। मिस्र में वैधानिक शासन प्रणाली का आरम्भ हुआ है तथा १९२४ ई० में मिस्र की प्रथम पार्लियामेंट का उद्घाटन फुआद प्रथम ने किया।

वीर बालक की कहानी

ओरियन्ट नामी फ्रांसीसी (झंडे वाले) जहाज के कप्तान के एक बारह वर्षीय पुत्र था। कप्तान के पुत्र का नाम कैसावियानका था। कैसावियानका के पिता ने उसे आज्ञा दी कि वह जहाज के तख्ते (ऊपरी भाग में) पर खड़ा रहे और जब तक उसे वह न कहे वहां से न हटे।

ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी जहाजों में घमासान युद्ध हुआ और ओरियंट जहाज में अग्नि लग गई। जहाज जलने लगा और चारों ओर अग्नि की ज्वालाएँ तेज़ी से बढ़ने लगी। गोले तथा बारूद के धड़ाकों से समुद्र गूँज उठा। लोग अग्नि में जल जल कर गिरने लगे। जहाज के अंग तड़ाके का शब्द करते हुये इधर उधर उड़ने लगे। ऐसी दशा में कैसावियानका अपने स्थान पर खड़ा रहा और तनिक भी नहीं डरा। अग्नि ज्वालाओं को अपनी ओर बढ़ते देख कर उसने "पिता, पिता, कहिये ! क्या मेरा कार्य समाप्त हो चुका" कह कर पुकारा। उस समय उसका पिता जहाज के निचले भाग में जल कर मर चुका था बालक को इसका पता

न था। थोड़ी देर तक चुप रहने के पश्चात् बालक ने फिर अपने पिता को पुकारा और स्थान छोड़ने की आज्ञा चाही।

आग की लपटें आगे, पीछे, दाहिने, बाएँ चारों ओर से उसकी ओर बढ़ रही थीं। उसका समस्त शरीर आंच से जलने लगा। उसे वहां से हटने के लिये उसके पिता की आज्ञा नहीं मिली, उसने अपना स्थान भी नहीं छोड़ा। इतने में बारूदखाने में आग लग गई और धड़ाके के साथ जहाज उड़ गया। जहाज के भिन्न-भिन्न भाग समुद्र में जा गिरे। कैसाबियानका भी मृत्यु की गहरी निद्रा में सदैव के लिये सो गया और फिर उसका पता न रहा।

इस प्रकार वीर बालक की गति हुई। वह इतना वीर था कि मृत्यु से भी नहीं डरा और अपने पिता की आज्ञा के बिना अपने स्थान को नहीं छोड़ा। इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हमें अपने कर्तव्य का पालन सभी संकटों का सामना करते हुये करना चाहिये और सङ्कट देखकर कर्तव्य से विमुख न होना चाहिये।

सिकन्दरिया-दर्शन

पाम्पी स्तम्भ

यह पाम्पी स्तम्भ के नाम से इसलिये प्रसिद्ध है कि पहले लोगों का विश्वास था कि इसके नीचे पाम्पी का सिर गड़ा हुआ है। परन्तु खोज करने से यह सिद्ध हुआ है कि सिकन्दरिया एक प्रीफेक्ट ने इस स्तम्भ को महाराज डिओक्लेशियन की स्मृति में २६७ वर्ष ईसा के पूर्व बनवाया था। इसके आधार के पश्चिम की ओर एक शिलालेख है जिसमें ये शब्द अंकित हैं। "यह उस न्यायी महाराजाधिराज की स्मृति है जिसका नाम डिओकलेशियन, अजीत पोस्टमस था। वह सिकन्दरिया का देवता माना जाता है और मिस्र का प्रेफेक्ट (शासक) था।" सिकन्दरिया के बिसत्रकारियों के प्रति डिओक्लेशियन ने बड़ी उदारता दिखलाई थी और गरीबों को रोटी बांटी थी इसलिये उसकी स्मृति में यह मूर्ति है। मूर्ति नष्ट हो गई है।

जहां तक खोज से सिद्ध हो सका है यह बिल्लौरी पत्थर का यह स्तम्भ संसार में सब से बड़ा है इसकी ऊँचाई ८८ फुट वृत्त ९ फुट और तौल लगभग ६८८८

मन है ! यह लाल रंग का है और इसका शिषर सुन्दर कोरंथियन है।

सर्व प्रथम इस स्तम्भ पर एक अंग्रज पतंग और रस्सी के द्वारा चढ़ा था। इसी भांति १७६८ ई० में नैपोलियन बोनापार्ट और एडमिरल स्मिथ चढ़े थे। इसका सिरे का बृत १६ फुट ६ इंच है उस पर एक अंग्रेज महिला मिस तल्बोट ने कलेवा किया था और एक पत्र लिखा था।

पश्चिम की ओर इसके आधार में एक सूराख है। जिसमें एअरोगिलीफिक भाषा में कुछ अंकित है। यह प्राचीन मिस्र की तसवीरों वाली भाषा है।

यह स्तम्भ एक पत्थर के चबूतरे पर स्थित है। चबूतरे पर इंगलैंड, अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, भारतवर्ष आदि के प्राचीन यात्रिकों के नाम व पता पेंसिल, स्याही और चाकू आदि से अंकित हैं जिससे पता चलता है कि प्राचीन काल से ही लोग इसे देखने के हेतु संसार के सभी भागों से आते थे।

यह स्तम्भ ४० फुट ऊँचे एक भीटे पर स्थित है।

इसके चारों ओर खोदाई हुई है जिससे चारों ओर पत्थर बिखरे पड़े हैं।

इसके पश्चिम की ओर एक लकड़ी का छोटा छाता सा बना है जिससे तहखाना की ओर मार्ग है। नीचे जाने के लिये लकड़ी की सीढ़ियां बनी हैं। यह सीढ़ियां उस स्थान तक गई हैं जहां स्तम्भ खड़ा है। यहां के आदि निवासियों के बीच यह दंत कथा प्रसिद्ध है कि यह मार्ग फायोम नामक अद्भुत स्थान को जाता है जिसका पता किसी को नहीं है। कहते हैं कि स्तम्भ के स्थान पर मिस्री तथा यूनानी लोगों का सेरापेयम मन्दिर था। इस मंदिर में सेरापिस धर्म वाले लोग प्रार्थना किया करते थे। जब ईसाई धर्म का प्रचार सिकन्दरिया में हुआ तो यह मन्दिर अग्नि द्वारा नष्ट कर दिया गया जिससे मूर्ति पूजा का अन्त हो जाय।

स्तम्भ के पूर्व की ओर दो स्फिनिक्सों की मूर्तियां हैं। स्फिनिक्स एक प्रकार का पशु माना जाता है जिसका सिर शेर का और शेष धड़ स्त्री का होता है। यह मूर्तियां बिल्लौरी पत्थर की बनी है और गाढ़े काले रंग से रंगी हैं जिससे इनकी सुन्दरता और अधिक हो जाती है।

मुहम्मद अली नामक सड़क से इस स्थान को ट्रामकार जाती है। ट्राम गाड़ियां जो इस स्थान को जाती हैं उनमें बर्फी के भांति का हरे लोह का चिन्ह बना रहता है। दस मिनट में ही हम पाम्पी स्तम्भ पहुँच जाते हैं। प्रथम श्रेणी का किराया एक दीनार द्वितीय का आधा दीनार लगता है। शीत काल में प्रवेश फीस २ दीनार और ग्रीष्म काल में एक दीनार है। पाम्पी स्तम्भ सिकन्दरिया के म्यूज़ियम तथा कोमेल शोगफा के कटा कोम्बस आदि की सम्मिलित फीस ८ दीनार है। और ऊपर लिखे किसी भी स्थान पर खरीदा जा सकता है। यह टिकट एक सप्ताह तक काम देता है। सैनिक लोगों से फीस नहीं ली जाती है।

शीतकाल में (१ अक्टूबर से ३१ मई तक) में देखने का समय ९ बजे प्रातःकाल से ५ बजे संध्या तक है तथा ग्रीष्म ऋतु (१ जून से ३० सितम्बर तक) में ९ बजे सवेरे से ६ बजे संध्या तक है।

———

सिकन्दरिया-दर्शन

यूनाना-रोमन म्यूज़ियम

यह म्यूज़ियम (अजायबघर) म्यूनिसिपैलिटी हाल के पीछे स्थित है। यहां लाग एल अन्तिक-खाना नामक ट्रामकार से ६ मिनट में ही पहुँच जाते हैं। इन गाड़ियों पर श्वेत-तारा का चिन्ह बना होता है? अजायबघर के देखने की फीस शीतकाल में दो दीनार और ग्रीष्मकाल में एक दीनार है। देखने का समय शीतकाल में सबेरे ९ बजे से १२ बजे तक और फिर ३ बजे से ५ बजे शाम तक है। गरमी के दिनों में देखने का समय सबेरे ९ बजे से १२ बजे तक और शाम को ४ बजे से ६ बजे तक है!

अजायब घर में कुल २२ बड़े कमरे हैं। जिनमें प्राचीन सुन्दर वस्तुएँ तथा मूर्तियां सुन्दर ढंग से रक्खी हुई हैं।

मार्कस और लियस की मूर्ति बड़ी सुन्दर है औरे-लियन एक प्रसिद्ध रोमन राजा तथा भाषक था। यह मूर्ति ७ फुट ऊंची है और सफेद संगमरमर की बनी है। शासक का चित्र शाही पोशाक में है और देखने

में मालूम होता है कि जैसे वह भाषण देने ही जा रहे हैं।

ऐपिस देव (एक सांड़) अजायबघर के एक बड़े कमरे के मध्य में स्थापित है। देव मूर्ति साढ़े छः फुट ऊंची काले विलमोरी पत्थर की है। प्राचीन समय में इनकी पूजा करते थे। देव मूर्ति के सींगों के मध्य सूर्य देव की गोली मूर्ति बनी है। देखने में यह मूर्ति बड़ी तेजस्वी है।

एक दूसरे कमरे में एक गृद्ध की मूर्ति एक बड़े पत्थर की शिला पर स्थापित है। यह मूर्ति बड़ी सुन्दरता के साथ दानेदार स्वेत संगमरमर काट कर बनाई गई है।

दो तीन कमरों में शीशे के सन्दूकों में कुछ प्राचीन प्रसिद्ध मनुष्यों के मृतक शरीर हैं। यह लाशें हज़ारों वर्ष पूर्व की हैं पर इनके शरीर अब तक सुरक्षित है। इन पर वैज्ञानिक रसाइनों तथा औषधियों का प्रयोग किया गया है जिसके कारण यह अब तक कायम हैं। इनके शरीर कपड़े से ढके हैं पर बाल, स्वेत दांत तथा खोपड़ी खुले हैं। खोपड़ी की खाल वैसी है भूरे रंग

की है। बाल तथा दांत वैसे के वैसे ही अब भी हैं। इनके सुरक्षित रखने में जिस वैज्ञानिक क्रिया का प्रयोग किया गया है उसे मानव विज्ञान ने शायद आधुनिक युग में अब तक पता नहीं पाया है।

इन मृतक शरीर के चेहरे उदास, कुरूप और भयभीत हैं। इसका कारण यह है कि इन्होंने वर्षों के कष्टों का सहन किया है और उसकी छाया इन पर पड़ी है यद्यपि यह शरीर सिकन्दरिया के प्राचीन सुखी तथा हसमुख व्यक्तियों के हैं। कुछ व्यक्तियों के पांवों के समीप कपड़े के खड़ाऊं रक्खे हुये हैं। प्राचीन समय में सिकन्दरिया के मृतक शरीरों को यह पहनाये जाते थे। इनके अतिरिक्त कमरों में नक्क़ाशीदार मेज़, कुर्सियां, पत्थर की मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन, सुराहियां शीशे के बर्तन, ऊनी तथा सूती कपड़े और आभूषण आदि हैं। यह वस्तुएं इतनी सुन्दर हैं कि आधुनिक युग में भी इनसे बढ़ कर वस्तुएं अभी तयार नहीं हो पाई हैं।

एक बड़े कमरे में प्राचीन स्त्रियों की छोटी मूर्तियों का ढेर है। यह मूर्तियां बड़ी सुन्दर बनी हैं और सुन्दर रंग-विरंगे वस्त्र तथा आभूषण पहने हुये हैं। यह मूर्तियां

प्राचीन काल की स्त्रियों की रूपरेखा का अच्छा ज्ञान कराती हैं। इनकी छटा इतनी सुन्दर है कि लोग देर तक इन्हें ताकते रहते हैं और मुग्ध हो जाते हैं।

अजायबघर के कमरों से घिरे हुये बड़े आंगन में पत्थर की बनी हुई भांति भांति की मूर्तियां हैं जो प्राचीन काल की सभ्यता का ज्ञान कराती हैं। अजायबघर का पूर्ण रूप से अवलोकन करने के बाद जब लोग बाहर आते हैं तो अनुभव करते हैं कि आधुनिक युग की कला कौशल तथा सभ्यता प्राचीन युग से कहीं पीछे है।

कोम एल शोगफा का मुर्दों का तहखाना

यह मुर्दों का तहखाना पाम्पी स्तम्भ के पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर स्थित है। यह तहखाना एक पहाड़ी के भीतर शिलाओं को काट कर बनाया गया है। यह तहखाना तीन तल्लों का बना है। इसके भीतर प्रवेश करने का मार्ग ऊपर के चतुर्थ तल्ले से था। इसका

सबसे निचला भाग सदैव पानी से भरा रहता है। इसकी शिल्पकला तथा अद्भुत कारीगरी अपूर्व है इसी कारण यात्रियों का ध्यान इधर अवश्य ही आकर्षित होता रहता है।

इस मृतक शरीरों के तहखाने का पता डाक्टर बोटी ने १६०० ई० में लगाया था। इसकी खोज अचानक ही गई। जब कोमयल शोगफा के मकबरे के बालू के भीटों की खोदाई हो रही थी तो बोटी के कहने के अनुसार सरकार ने खोदाई करने वालों को मजबूर किया कि वह पृथ्वी के भीतर बने तहखानों को भी साफ करें और प्रवेश करके देखें कि उनमें क्या है। स्मृतियों को सुरक्षित रखने के लिये बिजली की बत्तियों का प्रयोग किया गया जिससे अंधेरे में किसी प्रकार की त्रुटि न हो जाय। यद्यपि इन मकबरों का निर्माण काल की तिथि का निश्चित रूप से अभी तक पता नहीं लग पाया है फिर भी अनुमान किया जाता है कि यह स्मारक प्रथम और द्वितीय शताब्दी के मध्य में बनाए गए होंगे।

प्रवेश मार्ग से एक घुमावदार सीढ़ी प्रथम तल्ले को जाती है। सीढ़ी में दाहिने और बाएँ अर्ध वृत्ताकार

झरोखे बने हुये हैं। यह झरोखे पच्चीकारी की सजावट से परिपूर्ण हैं। प्रथम तल्ले में एक वृताकार बड़ा कमरा है जिसके मध्य में एक गड्ढा है। यह गड्ढा एक अष्ट स्तम्भाकार इमारत से ढका है। इसके गोले भवन के चारों ओर कमरे बने हुये हैं। इन कमरों में चारों ओर ताक बने हुये हैं जिनमें मांस भक्षक लोगों की सुराहियाँ तथा सामान रक्खे हैं। इन कमरों में मुर्दे दीवार में बड़े सूराख बनाकर नीचे उतारे गये थे। दीवा अथवा लालटेन जो इनमें रक्खे गये थे उनके धुएँ अब भी दीवारों में वर्तमान है।

प्रवेश मार्ग के बाएँ तरफ एक बड़ा कमरा है। इस कमरे में श्राद्ध के दिन मरे व्यक्तियों के परिवार के लोग भोज में सम्मिलित होते थे। यहाँ तीन चारपाइयां तथा स्तम्भ पत्थर काट कर बनाये गये हैं।

दूसरे तल्ले को जाने वाले सीढ़ी मार्ग के मेहराब शिल्प कला से सजे हैं। सारा मार्ग भांति भांति की पच्चीकारियों, मूर्तियों से सजा हुआ है। सीढ़ियों की छत की कला मिस्री नहीं है उसमें रोमन तथा कोप्टिक कला का प्रयोग किया गया है।

सिकन्दरिया-दर्शन

आगे चलकर यह सीढ़ी मार्ग दो भागों में बँट जाता है। एक सीधा दाहिनी ओर नीचे को और दूसरा बाईं ओर नीचे चला जाता है। बाईं ओर वाला मार्ग नीचे तीसरे तल्ले को चला जाता है। यह तल्ला पानी से परिपूर्ण रहता है। इस सीढ़ी के अन्त में मृतक संस्कार वाले मन्दिर की ड्योढ़ी है।

इस ड्योढ़ी के अगले भाग में दो स्तम्भ हैं। बगल की दीवारों में दो ताक बने हुये हैं। दाहिनी ओर वाले ताक़ में मर्द की और बाईं ओर वाले ताक़ में स्त्री की एक एक सफेद पत्थर की मूर्तियां हैं। यह मूर्तियां शायद वेस्पासियन और हैड्रियन काल की हैं।

एक दूसरे कमरे में प्रवेश करने वाले द्वार के दोनों बाजुओं में दो सांपों की मूर्तियां हैं। यह मूर्तियां ओस-रिस लोगों के सर्पदेवों की हैं ओसरिस लोगों का विश्वास था कि ये सर्पदेव मरने के पश्चात् न्याय करते हैं और मृतक आत्मा को मार्ग बतलाते हैं। यह कमरा मृतक लोगों के संस्कार का गृह प्रतीत होता है। इस कमरे की तीनों भीतों में एक एक ताक़ हैं। सामने वाले ताक़ में मृतक प्राणी (रानी) के लेटे हुये शरीर का

दृश्य दिखाया गया है एक ताक में ओसरिस एक चारपाई पर ममी रूप में लेटा है वह शाही भेष में है। चारपाई बाघ रूपी है जिसके सिर पर ओसरिस का ताज है। उसके बगल में दो सांप है और हाथ में भाला है। चारपाई पर के सिरे थाथ (लेख तथा विज्ञान देवी) खड़ी है उसके हाथ में एक ताज, एक बर्तन और मृतक के हेतु उपहार है। इसी भांति चारपाई पैताने की ओर होरस देव खड़े हैं।

इसी भांति एक ताक में पुजारी का चित्र दिखाया गया है पुजारी महाशय के हाथ में कमल पुष्प, प्याला और करवा है। यह पुजारी मृतक लोगों का संस्कार कर रहा है और उन्हें वरदान तथा मंत्रदान दे रहा है।

इसी भांति एपिस, इसिस, अनूबिस, मेकडोन आदि भांति भांति के देवताओं तथा देवियों का चित्रण किया गया है। इन चित्रों के देखने से पता चलता है कि प्राचीन सिकन्दरिया निवासी शिल्प कला में बड़े प्रवीन थे और वह लोग भी हिन्दू भारतीय लोगों की भांति विश्वास करते थे कि मरने के पश्चात् मनुष्य को

किन-किन कष्टों का सामना करना पड़ता है और उनके उद्धार के लिये मनुष्य को क्या करना चाहिये।

स्मारक वाली सीढ़ियों के दक्षिण द्वार से गैलरियों को मार्ग है। गैलरियों (अटारियों) पर बहुत से छिद्र हैं जिनमें मरे हुये लोगों के नाम काले तथा लाल रंगों में अंकित हैं। प्रत्येक छिद्र में दो से चार तक लाशें रक्खी हैं। कुछ ताकों में मृतक लोगों के फूल सुराहियों में रक्खे हुये हैं जिससे सिद्ध होता है कि उसकाल में भी लोग लाशों को जलाते थे और अपने पूर्वजों के फूल का संस्कार करते थे। इसके अतिरिक्त और दूसरी अटारियां तथा कमरे हैं जिनमें लाशें आदि नहीं हैं शायद यह स्थान बाद में होने वाले शासकों ने बनवाये होंगे।

प्रत्येक स्मारक में प्राचीन चित्रों, मूर्तियों और शिल्प कला का अपूर्व प्रदर्शन किया गया है। यह दृश्य स्वयं अपनी कहानी बतलाते हैं।

एक स्थान में छत पर दो देवियों के चित्र अंकित हैं। सूर्यदेव का चित्र अंकित है और उसके नीचे एक प्याला दिखाया गया है जिसमें से अग्नि ज्वाला निकलती हुई दिखलाई गई है। इसके दक्षिण तथा वाम

भाग में दो स्फिनिक्स आमने सामने बने हैं जिनके दाम पञ्चे एक पहिये पर रक्खे हुये हैं।

इस स्मारक का नाम करकल्ला हाल है क्योंकि यहां घोड़ों तथा मनुष्यों के बहुत से ढाँचे पाये गये थे। कहते हैं कि जब रोमन राजा कराकला ने सिकन्दरिया पर आक्रमण किया तो उसने सब लोगों को मार डालने की आज्ञा दी। मारने के भय के कारण युवकों का समूह अपने घोड़ों पर चढ़ कर भागा और राजा के सिपाहियों ने उनका पीछा किया। वह समूह इसी स्थान में आकर छिप गया। जिसे राजा की सेना ने आकर मार डाला था।

अबौकिर

समुद्र के किनारे अबौकिर नामक ग्राम स्थित है। इस गांव के पास पड़ोस में प्राचीन सभ्यता के अमूल्य दृश्य वर्तमान हैं जिनका भ्रमण बड़ा ही मनोरंजक होता है।

अबौकिर स्टेशन से उतर कर पश्चिम की ओर

डानीनोस पाशा के निवास स्थान की ओर मार्ग जाता है। वहां से सीधा मार्ग टाफ्कीह क़िले को है। सिकन्दरिया में गदहे की सवारी का प्रयोग होता है इसलिये लड़के अपने अपने गदहे लिये इधर-उधर घूमा करते हैं किले का मार्ग ऐतिहासिक महत्व रखता है। यहीं नैपोलियन की सेना ने जुलाई सन् १७९९ ई० में तुर्की सेना को परास्त किया था और कहा जाता है कि ५,४०० व्यक्ति समुद्र में डुबोकर मार डाले गये थे।

टाफ्कीह क़िला आजकल तटीय रक्षक स्टेशन है। इसे देखने के लिये तटीय रक्षक संस्था अथवा क़िले के प्रधान अफसर से आज्ञा लेनी पड़ती है। किले के ऊपर से वाटिकाओं तथा पार्कों का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है। समीप में ही मोंतजाह पार्क है जहां फाऊद बादशाह ग्रीष्म ऋतु में निवास करते हैं। १९१४ ई० के योरुपीय महायुद्ध काल में यहां पर बृटिश रेडक्रास सोसाइटी का केन्द्र था।

दक्षिण की ओर कनोपस नगर के खण्डहर हैं। यह खण्डहर तमाम पास पड़ोस की भूमि में फैले हुये हैं और प्राचीन सभ्यता की याद दिलाते हैं। कहते हैं कि

क़िले के ठीक दक्षिण की ओर जो खण्डहर है वहां पर सरापिस देव का बड़ा मन्दिर था। यह देव मिस्री लोगों के देवताओं के पिता थे। मोंतज़ाह तथा समुद्री किनारे पर लाल ईंट के बने हुये टूटे फूटे खण्डहर फैले हैं। कहते हैं कि यहां पर प्राचीन समय में शाह स्नानागार तथा घाट थे जिन्हें भूमध्यसागर की लहरों ने बहाकर नष्ट कर दिया।

तृतीय भाग नहाने तथा तैरने के लिये बड़ा ही सुन्दर स्थान बृटिश शाही हवाई सेना के जो लोग यहां रहते हैं वह यहां के स्नान पूर्ण आनन्द प्राप्त करते हैं।

जेफेरियम अंतरीप का भ्रमण बड़ा ही सुहावना लगता है वहां सदैव ठंडो-ठंडी समुद्री हवा चलती रहती है। यहीं पर केटवे का किला बना है। यह क़िला अफ्रोडाइट देव के मन्दिर के स्थान पर बनाया गया है अफ्रोडाइट देव के सम्बन्ध में एक कहानी है। कहते हैं कि जब अफ्रोडाइट असीरिया विजय के लिये गया तो उसकी स्त्री ने थैंकगिविंग उत्सव के अवसर पर अपने सुनहरे बाल की एक लट काट कर दान दे दी ताकि

उसका पति सुरक्षित लौट आवे। कहते हैं कि बाल की लट आकाश में जाकर तारागणों के रूप में बदल गई। यह मत कोनन नामक ज्योतिषी का है। कालीमाचस नामक कवि का कहना है कि जब रानी ने अपनी सुनहरी लट काटो तो जेफिर कनोपिक तट पर भेजा गया और वह उस बाल को प्रेम की देवी के पास ले गया। उससे अफ्रोडाइट ने एक नया तारागण बनाया और उसे कुमारी (तारागण) के मध्य स्थापित कर दिया। यह तारागण अब भी "बेरेनाइस के बाल" के नाम से प्रसिद्ध है।

केटबे क़िले में प्राचीन तोपें रक्खी हैं क़िले के ऊपर से अबैकिर खाड़ी तथा रोसिटा का सुन्दर दृश्य दिखलाई पड़ता है। अबौकिर खाड़ी के सामने कुछ दूरी पर नेल्सन द्वीप है। इस द्वीप का नाम नेल्सन द्वीप इस कारण है कि अगस्त १७६८ ई० में एडमिरल नेल्सन ने इसी स्थान पर फ्रांसीसी जहाजी बेड़े को परास्त किया था। यह संग्राम इतिहास में "नील के युद्ध" के नाम से प्रसिद्ध है।

राम लेह क़िला तथा रोसिटा के मध्य बहुत से खण्डहर निजी व्यक्तियों के घरों के हैं। इनके देखने

से पता चलता है कि उस काल के लोग किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करते थे। रसोईघर, स्नानागार, शयनागार गृहस्थी के समान, बर्तन, तेल तथा शराब निकालने के बड़े बड़े सामान आदि उस काल की सभ्यता का सुन्दर ज्ञान कराते हैं। क्लोपैट्रा का स्नानागार अब भी बना है। यह लाल सिमेन्ट का बना है इसमें उतरने के लिये पत्थर की सीढ़ियां बनी है।

इन सीढ़ियों द्वारा नीचे उतरते समय क्लोपैट्रा यथा उसकी स्त्री की याद आ जाती है। यहीं घाटों में प्राचीन काल में लोग जलक्रीड़ा किया करते थे और उनकी नावें पुष्पों से सुसज्जित हुआ करती थीं। उस समय प्टोलेमेइक राजों के नगरों का अफ्रोडाइट, इसिस और सेरापिस के नगरों से सम्बन्धित करने के लिये एक नहर बनी थी। इसी नहर में उस समय के सुखी निवासी बोटों पर जलक्रीड़ा करते थे।

सिकन्दरिया के प्रधान स्टेशन से यहां की यात्रा करने में एक दिन लगता है। विक्टोरिया रामलेह ट्राम लाइन का स्टेशन है वहां से यदि इस गांव की यात्रा की जाय तो भी एक दिन लगता है। दिन भर का जो

लोग भ्रमण करते हैं वह समुद्री तट के होटल अथवा भोजनालयों आदि में जलपान करते हैं। स्टेशन पर ही गदहे रखने वाले लड़के ठीक उसी प्रकार मिल जाते हैं जैसे कि हमारे देश में स्टेशन से बाहर आते ही एका तांगा वाले मिल जाते हैं। गदहे की सवारी के लिये एक शिलिङ्ग प्रति घंटा किराया देना पड़ता है।

नौज़ा वाटिकाएँ

महमोदिया नहर के ऊपर लगभग ६० एकड़ भूमि में नौज़ा वाटिकाएं फैली हुई हैं। सिकन्दरिया नगर के मोहम्मदअली नामक स्थान के ग्रैंडस्क्वायर से यदि मोटर द्वारा इन वाटिकाओं के लिये नहर की पटरी वाली सड़क से यात्रा की जाय तो ३० मिनट लग जाते हैं। यह मार्ग कमौज़ नामक पुल होकर जाता है। पर अधिकांश यात्री सुल्तान हुसैन, वाटरवर्क्स स्क्वायर और हदरा होकर जाते हैं। ट्राम गाड़ियां यात्री को यहां तक शीघ्रताशीघ्र पहुँचा देती हैं।

यह वाटिकाएं लोहे के बाड़े से घेरी हुई हैं। नहर के सामने वाटिका में प्रवेश करने के लिये प्रधान मार्ग

है। इसी मार्ग से पैदल यात्री अथवा सवारियां भीतर प्रवेश करती हैं। वाटिकाओं के मध्य में जलपान करने के लिये एक क़हवाखाना बना है। यह क़हवाखाना खुले मैदान में है। यहां पर प्रत्येक रविवार तथा शनिवार को पुलिस-बैंड बजा करता है।

इसी क़हवाखाना के समीप कुछ छोटे-छोटे बाड़े बने हैं यह बाड़े अजायब घर का काम देते हैं और भांति-भांति के बन्दर, चिड़ियां, जेबरा, शेर, मृग आदि इसमें रक्खे गये हैं। यह अजायब घर प्रति वर्ष उन्नति करता जा रहा है।

इस वाटिका में संसार के चुने हुये वृक्ष पौदे और पुष्प आदि लगाये गये हैं। इसके पैदल मार्ग बड़े सुंदर तथा स्वच्छ बने हैं। वृक्षों और पौदों के मध्य नालियां छोटी नहरें तथा सरोवर आदि बनाए गये हैं। इनमें सदैव पानी रक्खा जाता है जिससे वाटिका में हरियाली बनी रहे। इन जलाशयों में कमलनियों के पुष्प अपने हरे पत्तों के मध्य खिले रहते हैं।

इस वाटिका में एक ओर एक लम्बा पगडंडी मार्ग है। इस पगडंडी मार्ग में दोनों ओर लताएँ लगी हैं।

इन फैलने वाली लताओं ने मार्ग को घेर लिया है और अपनी डालियों तथा पत्तियों से समस्त मार्ग में एक छत सी बना दी है। यह कुञ्ज मार्ग बड़ा ही सुन्दर है। इनमें दो या तीन लताएँ छुई मुई (लाजवंती) पौदे की भांति हैं। उनकी पत्तियों को यदि कूमलता पूर्वक स्पर्श किया जाता है तो वह झुक जाती हैं मालूम होता है कि मानो लज्जा वश पत्तियां झुक गई हैं। कुछ समय के पश्चात् वह पुनः अपने रूप में आजाती हैं।

यहां पर दो पौदे मक्खी पकड़ने वाले हैं। इनको नेपेनथेस (मक्खी पकड़ने वाला) कहते हैं। इसकी पत्तियों में सींग की भांति एक झोला सा होता है जिसके नीचे कुछ चिपकने वाली वस्तु रहती है। इस वस्तु की लालच में मक्खी तथा कीड़े मकोड़े उसके समीप जाते हैं और उसके जाल में फँस जाते हैं। वह उसी में चिपक जाते हैं और मृत्यु के शिकार बन जाते हैं।

इस वाटिका का प्रवेश द्वार सदैव बन्द रहता है। देखने वालों को द्वार धक्का देकर खोलना पड़ता है। प्रवेश करने पर एक बड़ा कमरा मिलता है जिसमें बड़े बड़े पौधे सजधज के साथ लगाए गये हैं। पौधे भूमि पर

लगे हैं पर उनकी लताएं छत के नीचे की ओर रस्सियों द्वारा लटकती रहती हैं। इनकी लताएं तथा पत्तियां बड़ी ही मनोहर प्रतीत होती हैं। हाल के चारों ओर तार-स्तम्भ हैं जिनमें पौधों की खूराक के लिये मिट्टी भरी रहती है।

इस बड़े कमरे के प्रत्येक ओर एक एक लम्बा कमरा है जिसमें रंगीली पत्तियों वाले पौधे लगे हैं। यह पौधे सुन्दर ढंग से सजाए गये हैं।

नौजा बाग़ के पश्चिम ओर टेनिस खेलने के लिये एक मैदान है। मैदान में पहुँचने के लिये सीढ़ी मार्ग बना है। यहां टेनिस खेलने के लिये किसी भांति की मनाही नहीं है पर जो लड़के वहां गेंद पहुँचाने के लिये रहते हैं उन्हें कुछ न कुछ बख़शीश अवश्य देनी पड़ती है।

यात्रियों के लिये यह वाटिका बड़ा ही मनोरंजन का काम देती है। इसकी छटा देखकर लोगों का हृदय प्रफुल्लित हो जाता है और मनुष्य अपने मार्ग के कष्ट को भूल जाता है।

महमौदिया नहर

महमौदिया नहर बड़ी प्राचीन है। १८१६ ई० में मोहम्मद अली पाशा ने इसे पुनः बनाना आरम्भ किया था पर २० हज़ार मज़दूर एक ही वर्ष में भूक तथा थकावट से मर गये इस कारण नहर के दुबारा बनाने का काम समाप्त न हो सका।

यह नहर नील नदी से निकाली गई है। यह नील नदी से अल-अत्फ के स्थान के समीप से निकाली गई है और आखिर समुद्र में जाकर मिला दी गई है। जहाँ पर यह समुद्र में प्रवेश करती है वहीं पर हार्बर है।

इसी नहर से सिकन्दरिया नगर को पानी मिलता है। समस्त मिस्र से सामान लादे हुये नावें इसी नहर द्वारा सिकन्दरिया आती हैं। इस प्रकार यह नहर व्यापार की दृष्टि से बड़ा महत्व रखती है।

प्राचीन समय में नगर के समीपवर्ती नहर तट का मार्ग बड़ा ही मनोहर तथा सुन्दर था पर अब कुछ खराब हो गया है फिर भी सड़क पर सुन्दर छायादार

वृक्ष लगे हैं नहर के तट पर ही सर जान एँटोनियाडिस बाग़ स्थित है।

नगर से सब लोग रागेब पाशा नामक ट्राम गाड़ियों द्वारा रागेब पुल जाते हैं और फिर नहर तट पर सुन्दर वायु के सेवन करते हैं। बोट पर बैठकर हवा खाना तथा जल क्रीड़ा करना नगर निवासियों का दैनिक कार्य क्रम सा है। बोट वाले को एक शिलिंग प्रति घंटा किराये रूप चुकाना पड़ता है।

नहर का दृश्य बड़ा ही रमणीक है। तट पर वृक्ष तथा लताएँ हैं। नहर में भाँति भांति की नावें, बजरे दिखाई पड़ते हैं। नावों पर व्यापार सम्बन्धी सामग्री लदी रहती है। पिकनिक पार्टियों की बोटों की भरमार रहती है। इन बोटों को 'दहाबियस' कहते हैं। फेहाल नामक बोटों पर लोग अपने बाल बच्चों, गृहस्थी के समान तथा पशुओं के साथ चलते हैं।

ढालू तटों पर भांति भांति के पानी वाले पौदे उगते हैं और उनकी पत्तियां पानी पर तैरती दिखाई पड़ती हैं।

सिकन्दरिया-दर्शन

कैबारी स्थान पर नहर पार करने के लिये एक पुल बना है। पुल के समीप संगमरमर की एक शिला स्तम्भ गड़ा है। इस शिला में मोहम्मद अली शाह की स्मृति में एक तुर्की कविता अंकित है। यह कविता बड़ी सुन्दर है। कविता की अंतिम पंक्ति के अक्षरों को वर्णमाला के अनुसार जोड़ने पर इस शिला के स्थापित करने की तिथि (१२३४ हिजरी) निकल आती है। इस कविता को दूसरी जैदमुस्तफा इज़्ज़त नामक कवि ने लिखा था।

रामलेह

सिकन्दरिया का समीपवर्ती पास पड़ोस का स्थान बलुहा है जिसे रामलेह अथवा एल राम्ल कहते हैं। यह मैदान तटीय प्रदेश में रामलेह टरमिनस, मेसाला से विक्टोरिया स्टेशन तक फैला हुआ है। इस प्रदेश में ट्राम गाड़ी चलती है। क्लोपैट्रा नीडिल्स जहां पर था वहीं अब रामलेह टर्मिनस का स्टेशन है। इसके चारों ओर का प्रदेश मेसाला नाम से प्रसिद्ध है।

लाज़ोरटाः—अर्बी भाषा में इसे माज़ोरटा कहते हैं। समुद्र के सामने जहां डिस्ट्रिक्ट सर्वे दफ़्तर है वहीं पर

महारानी क्लोपैट्रा का महल था। दफ़्तर के सामने सरकारी अस्पताल, खारतूम स्तम्भ और म्युनिसपल पार्क स्थित हैं। पहले यहीं प्राचीन थेटर, राजाओं के महल और नीपोलिस थे।

चाटे:—समुद्र तट के सामने वह स्थान है जहां पहले राजमहल तथा मन्दिर थे। आज कल इस महल को सिसोला क़िला कहते हैं। एक चौकोर कमरा केवल चिन्ह मात्र अब शेष रह गया है। जब समुद्र शान्त रहता है तो यह पानी पर तैरता सा प्रतीत होता है। इसे मिस्री लोग "ओम द्रायाह" कहते हैं जिसका अर्थ निशस्त्र-स्त्री का कमरा होता है।

सिसोला क़िला के मार्ग में स्टेशन, म्युनिसपल स्टोर्स और सरकारी स्कैवेंजिंग विभाग के दफ़्तर हैं। स्टेशन के समीप शाही हाईड्रोबायोलाजिकल इन्स्टीच्यूट है और स्टेशन के सामने यूनानी तथा मोहम्मद अली का कला-कौशल का स्कूल है। इसके आगे म्युनिसपल पार्क तथा दूसरे स्थान हैं।

चाटबेलेस बेन्स:—यहीं पर सिकन्दरिया के प्राचीन निवासी अपनी लाशों को गाड़ते थे। यहां सब कहीं

समुद्र तट पर क़ब्रस्तान (मुर्दों के गाड़ने का स्थान) था। यहां पर एक फ्रांसीसी स्कूल, यूनानी स्टाडियम और स्नानागार बने हैं।

सज़िर का कैम्प तथा इब्राहीमिया :—यहां एक होटल, संगीतघर, स्नानागार है। यह स्थान केवल ग्रीष्म काल में खुले रहते हैं। यहीं "लूना पार्क" है जहां एक सुन्दर वाटिका तथा फिसलने का खेल करने का स्थान है।

इब्राहीमिया से सिदीकाबेर तक का तट दंदानेदार है। यहां कहीं कहीं ऊंची छोटी चट्टानें हैं जो समुद्र के भीतर निकली हुई दिखाई पड़ती हैं। यहां पर कुछ स्थानों पर जो चट्टानें पानी में डूबी हुई हैं उनमें चौकोर तथा गोलाकार सूराख हैं। इनसे प्रतीत होता है कि यह प्राचीन मक़बरों की स्मृतियां हैं जो शेष रह गई हैं।

स्पोर्टिंग क्लब—यहां पर सिकन्दरिया के स्पोर्टिंग क्लब (खेलाड़ी संस्था) के मैदान तथा भवन हैं। यहां का दृश्य बड़ा रमणीक है सामने के मैदान में सुन्दर घास उगी हुई है और पीछे खजूर के वृक्षों का समूह है।

ग्रीष्म ऋतु में इस मैदान में प्रत्येक शनिवार

तथा रविवार को दोपहर के पश्चात् दौड़ होती है। इस दौड़ में केरो तथा सिकन्दरिया के आधुनिक फैशन के लोग सम्मिलित होते हैं। ऐसे अवसरों पर यहां ग़रीब तथा साधारण श्रेणी के लोगों तथा व्यापारियों का मेला लग जाता है।

दौड़ के समय तथा शनिवार और बुधवार को प्रातःकाल से सूर्यास्त तक बाजा बजता रहता है।

क्लोपैट्राः—समुद्री तट के समीप क्लोपैट्रा का सरोवर है जो स्नान तथा तैरने के लिये बड़ा ही उपयुक्त है समीप ही चट्टानों पर एक गुफा है जिसमें प्राचीन रंगीन ड्राइङ्ग के चिन्ह पाये जाते हैं जिससे प्रतीत होता है कि वहां पर किसी समय में कोई मक़बरा था।

सिदी काबेर—यह स्थान सिदी काबेर नामक मुसलमान फक़ीर के नाम से प्रसिद्ध है। जिसकी वहां पर समाधि है। उसके मक़बरे पर एक मसजिद बनी है जो उसी साधु के नाम से प्रसिद्ध है। यहीं सड़क पर संगमरमर का एक तिकोना स्तम्भ है। यह स्तम्भ उन बृटिश अफसरों तथा सैनिकों की स्मृति में स्थापित

किया गया है जो २१ मार्च सन १८०१ ई० में यहां मारे गये थे। स्तम्भ में सभी व्यक्तियों के नाम अंकित हैं।

राम हेल तथा अबौकिर से आने वाली सड़क यहां होकर मुस्तफापाशा स्थान तक जाती है। यहां समीपवर्ती प्रदेश में अंजीर तथा खजूर के बाग़ हैं।

मुस्तफापाशा एक स्टेशन है। रोमन लोग इस स्थान को कैम्प की भांति प्रयोग करते थे। इससे आगे कार्लटन का स्टेशन है।

बलकेले:—बलकेले के स्थान पर ही प्राचीनकाल में निकोपोलिस का प्राचीन नगर था। १८०१ ई० में यहां पर बृटिश तथा फ्रांसीसी सेनाओं से युद्ध हुआ था। फ्रांसीसियों की पराजय हुई जिससे बलकेले अँग्रेज़ों के अधिकार में आ गया।

समुद्र के सामने स्टैनली खाड़ी के पूर्व स्नान के लिये सुन्दर स्थान हैं। यहां पर एक प्राचीन मन्दिर था जिसके खंडहर अब भी वर्तमान हैं।

आधुनिक बलकेले एक छोटा सा महलों तथा वाटिकाओं का नगर है। यह सिकन्दरिया का वाटि-

काओं का नगर है। यहां पर ट्रामवे लाइनों की दो शाखाएं हो जाती हैं एक शाखा सैनस्टेफानो स्टेशन को और दूसरी लाइन विक्टोरिया स्टेशन को जाती है।

प्रथम लाइन पर फ़्लेमिंग, बैकोस, सेफर और स्चुज़ तथा सिनाकलिस स्टेशन पड़ते हैं। ट्राम गाड़ियों द्वारा यात्रा करने से इन स्टेशनों के देखने का आनन्द प्राप्त होता है।

सैन स्टफानोः—इस स्थान का प्रधान होटल कैसिनो सैनस्टफानो है। यह होटल भूमध्य सागर के तट पर स्थित है। यहाँ की जलवायु भी बड़ी सुन्दर है। यहां सदैव और मुख्यतः शनिवार को नाच-गान हुआ करता है। होटल के ऊपर से समुद्र का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है। यह होटल एक बड़े बाग़ में स्थित है। बाग़ में एक स्कैटिंगरिंक है।

बिजली से चलने वाली ट्रामवे गाड़ी की रामलेह लाइन के सिदीबिश्र, सेयूफ और विक्टोरिया अन्तिम स्टेशन हैं।

यहां ट्राम लाइन खजूर तथा नारियल के वृक्षों के मध्य होकर जाती है। विक्टोरिया स्टेशन के समीप ही

विक्टोरिया कालेज है। पास ही मिस्री सरकारी रेलवे लाइन का सिकन्दरिया-अबौकिर-रोसिटा स्टेशन बना है। स्टेशन के चारों ओर उष्ण प्रदेश के सुगन्धित वृक्ष लगे हुये हैं। मध्यवर्ती स्थान में नुबार पाशा की पीतल की मूर्ति है। यह किसी समय में मिस्री सरकार का प्रधान मन्त्री था। यह मूर्ति संगमरमर की चौकी पर स्थापित है।। मूर्ति की स्मृति में फ्रांसीसी भाषा में कुछ पंक्तियां अङ्कित हैं।

प्राचीन मिस्र का धर्म और देवता

प्राचीन मिस्र निवासी लोगों का विश्वास था कि मरने के पश्चात् भी मनुष्य की आत्मा का जीवन रहता है इसी कारण उन्होंने मोमियाई (मसाला इत्यादि लगा कर सुखाई हुई लाश) क्रम का प्रयोग किया। उनका मत था कि मरने के पश्चात् भी आत्मा आती है। और वह अपने शरीर का भ्रमण करती है।

मरने के पश्चात् मिस्री लोग लाश में एक सूराख करते थे और उसी के द्वारा अंतड़ियां, तिल्ली, कलेजा

और गुर्दा आदि निकाल लेते थे। वह दिल नहीं निकालते थे। नथनों के द्वारा वह लाश से मस्तिष्क को अलग करते थे। लाश के भीतर से निकाले हुये भागों को लोग कैनोपिक नामक सुराहियों में रखते थे। आप-सेट, हापी, डवामूरेफ केबेहसेनुफ आदि देव होरस देव के पुत्र मृतक शरीर की रक्षा करते थे।

शरीर को इस प्रकार साफ करके वह एक मसाले में सत्तर दिन तक तर करके रखते थे। उसके पश्चात् उसके भीतर लकड़ी का बुरादा या पिसा हुआ मिर्चा आदि शरीर में भीतर भर देते थे और फिर ठीक से पट्टी द्वारा समस्त शरीर को मज़बूती से बांध देते थे।

मिस्री लोगों का विश्वास था कि मनुष्य चार अंशों से मिल कर बना है। (१) शरीर, (२) बा (आत्मा) (३) खू (बुद्धि) और (४) का (गुण) ये चार अंश हैं।

उनके विश्वास के अनुसार पृथ्वी का निर्माणकर्ता खेपेरा नामक देव थे जिन्होंने (१) प्रकाश (२। आकाश (३) मानव जाति (४) चन्द्रमा (५) पौधे, जड़ी बूटियां

जलचर और थलचर (६) सात देवगण–जिनमें चार देवता और तीन देवियां आदि बनाए हैं।

मिस्री लोगों के मतानुसार उनके देवता खेपरा ने कहा "इनके बनाने के पश्चात् मैंने सदस्यों को एकत्रित किया और उनकी दशा पर रोया। मेरे रोने से जो आंसू गिरे उनसे पुरुष तथा स्त्री पैदा हुये।"

मरने के पश्चात् मनुष्य को सियार के सिर वाले अनूबिस देव ओसरिस देव के पास ले जाते हैं। अनूबिस (यमराज) मृतक प्राणियों के देव हैं। ओसरिस मृतक लोगों के न्यायकर्ता हैं। यहां ओसिस की अदालत में आत्मा न्याय, सत्य और सिद्धांत के तराज़ू में अनूबिस देव द्वारा तौली जाती है। थोथ देव न्याय का निर्णय लिखते हैं। अमाम राक्षसी अपराधियों का भक्षण करती है। अमाम राक्षसी का मुँह घड़ियाल का, बीच का भाग शेर का और पीछे का भाग हिपोटामस पशु का होता है थोथ के समीप ही होरस देव खड़े रहते हैं। वह इसिस के पुत्र हैं उनका सिर बाज़ चिड़िया की तरह है। वह पवित्र आत्मा को ओसरिस देव के पास ले जाते हैं। ओसरिस सनातनत्व के प्रधान

हैं और उनके शासन में मुक्ति, शांति और परम सुख तथा आनन्द का बास है।

यद्यपि प्राची मिस्री ४३८ देवताओं तथा देवियों की पूजा किया करते थे पर 'रा' समस्त देवी देवताओं के प्रधान माने जाते थे।

अम्मन रा :—यह थेब जाति के मुख्य देव (ब्रह्मा) हैं जिन्होंने संसार, जल, थल, आकाश और उसके प्राणियों की रचना की।

प्टाह :—यह देवों के पिता माने जाते थे और कहते हैं कि देव गण इनके मुख से उत्पन्न हुये थे।

चेनमू—भेड़ा के सिर वाले देव हैं। यह उत्तरी मिस्र के प्रधान देवता माने जाते थे और इन्होंने मनुष्य की रचना की। रा, अम्मन, प्टाह देवों की खूबियां इनमें वर्तमान मानी जाती थीं।

ओसरिस, इसिस और होरस :—ओसरिस, मृतक लोगों के न्यायकर्ता माने जाते हैं। उनकी उत्पत्ति सेब देव ने की थी जिससे 'रा' देव अप्रसन्न हो गये थे। इसिस उनकी स्त्री तथा बहिन बड़ी पालक तथा रक्षक थीं। उन्होंने मिस्री लोगों को कृषि करना सिखाया।

उनकी पूजा सीरिया और इटली में भी होती थी। होरस उनका पुत्र था वह पवित्र आत्मा को ओसरिस ले जाने का कार्य करते थे उन्होंने अपने पिता का सेट देव से बदला लिया था।

सेट—राक्षसों के देव थे। उन्होंने ओसरिस देव के मारने का जाल रचा। अपने सहयोगियों की सहायता से सेट ने एक सुन्दर संदूक बनवाया जो ओसरिस के ठीक नाप का था। उसके पश्चात् एक बड़ा भोज किया गया जिसमें ओसरिस भी पधारे। सेट ने कहा जो इस संदूक में ठीक से लेट जायेगा उसी को यह दे दिया जावेगा। एक के पश्चात् दूसरे ने उसमें लेटना आरम्भ किया जब ओसरिस उसमें लेटे तो सेट और उसके साथियों ने संदूक बंद कर दिया और उसे नील नदी में डाल दिया। वह बाद में समुद्र के किनारे लगा जिसे सेट १४ भागों में काट कर समस्त मिस्र में फेंक दिया। जब इसिस को पता लगा तो उसने अपने पति के टुकड़ों को एकत्रित करना आरम्भ किया उसे तेरह टुकड़े मिले। जहां कहीं भी शरीर का टुकड़ा मिला वहीं एक मन्दिर बनवाया गया इसी कारण ओसरिस के बहुत से मन्दिर हैं।

थोथ—भाषण, पुस्तक, विद्या, विज्ञान लेखनी विद्या, तथा तर्क शास्त्र विद्या के देवता हैं। उनकी स्त्री माट सिद्धांत की देवी हैं।

हटहोर—देवों की देवी, प्रेम-देवी तथा उस पर्वत की देवी हैं जो मिस्र को दूसरी दुनिया से अलग करता है। यह देवी स्त्री जाति में बर्तमान गुणों की देवी है और इसका स्थान मिस्र में वहीं माना जाता है जो कि हमारे भारतवर्ष में माया का है। माया के प्रधान गुण पत्नी, पुत्री तथा माता में अधिक पाये जाते हैं।

सेरापिस देव, प्टाह देव के अवतार हैं जो पृथ्वी पर आये थे।

खारतूम स्तम्भ तथा म्यूनिसपल पार्क

रू सुलतान हुसेन के अंत में म्यूनिसपल पार्क स्थित हैं। यात्रियों के लिये यह सुविधाजनक है कि वह रामलेह से सवारी द्वारा आकर लाजोरटा स्टेशन पर उतरें जहां पर कि सरकारी स्पताल तथा प्टोलेमेइक स्तम्भ है। यह स्तम्भ १८६८ ई० में जब बृटिश ने खार-

तूम विजय की थी तो उसी स्मृति में बनाया गया था। यह स्तम्भ ४६ फुट ऊँचा है और इस पर कुछ लाइनें अरबी में अंकित हैं। इसके दो ओर शेख-मेत मिस्री देवो की शेर रूपी मूर्ति बनी हैं।

रू सुल्तान हुसेन में बाईं ओर समुद्र की ओर क्रोमर पार्क है। यह पार्क स्त्रियों तथा बच्चों के लिये सुरक्षित है। स्तम्भ के आगे दूसरी ओर पुरुषों तथा स्त्रियों के हेतु एक पब्लिक वाटिका है। इसमें सुन्दर सुगन्धित वृक्ष लगे हैं। बीच में एक पीतल की मूर्ति नूबर पाशा की स्थापित है।

इस वाटिका का सम्बन्ध पूर्व की ओर एक बड़े पार्क से है जिसमें अप्राकृतिक नदी, नाले, द्वीप तथा पहाड़ियां आदि हैं। यहां कुछ पुल तथा पुराने बैरिक बने हैं जो खंडहर की दशा में हैं और जिनकी सुन्दरता झाड़ियों तथा फूल पत्तियों के उग आने से अधिक हो जाती है। छोटी नदी में लाल तथा सुनहली मछलियां इधर उधर तैरती दिखाई पड़ती हैं। पर कई एक छोटे छोटे प्रपात हैं जिससे वहां की सुन्दरता और अधिक बढ़ जाती है।

रू डे रामलेह तथा ड अबौकिर के चौरास्ते के समीप इस पार्क का अंत हो जाता है और दूसरे पार्क का आरम्भ होता है। यह पार्क अपने दृश्यों के लिये अपूर्व सुन्दर माना जाता है। इसके मध्य में एक ऊँचा टूटा फूटा क़िला है। इस क़िले के ऊपर सुन्दर लतादार पौधे उगे हुये हैं जिन्होंने समस्त क़िले को अपनी हरियाली से ढक रक्खा है। क़िले पर चढ़ने के लिये सीढ़ियां बनी हुई हैं जिनमें लोग ऊपर जा सकते हैं।

पहाड़ के ऊपर से भूमध्य सागर के बजरे, नावें तथा जहाज पूर्व पश्चिम की ओर आते जाते दिखाई पड़ते हैं। नावों की पंक्तियां सरपों की भांति नारियल के बागों के मध्य जाती हुई बड़ी ही सुन्दर प्रतीत होती हैं। यहां के समुद्र तथा भूमि दोनों की सुन्दरता अपूर्व है।



मोहम्मदअली एक्वेस्ट्रियन मूर्ति तथा वाटिका

मोहम्मदअली स्थान नामक जगह पर मोहम्मद-अली पाशा की पीतल की मूर्ति स्थापित है। मोहम्मद-अली मिस्र के आधुनिक शासक वंश का प्रथम शासक था और उसके वंश के लोग अब तक शासन कर रहे हैं। मोहम्मदअली ने मिस्र की बड़ी उन्नति की। कृषि, विद्या, विज्ञान आदि की उन्नति जो कुछ आधुनिक मिस्र में हुई है उसका श्रेय उसी को है।

यह मूर्ति लगभग १६ फुट ऊँची है और एक सुन्दर १४७६ फुट चौड़े मैदान में स्थापित है। इस मैदान में भांति भांति के सुन्दर पुष्प तथा वृक्ष लगे हैं। पुष्प क्यारियों के अतिरिक्त समस्त भूमि में चौकोर पत्थर के टुकड़े जड़े हुये हैं। इसका प्रबन्ध सिकन्दरिया के म्यूनि-सपल बोर्ड के हाथ में है।

मिस्री लोग इस स्थान को एल-मानशिया के नाम से पुकारते हैं। अरबी पाशा के सैनिकों ने इसी स्थान पर सिकन्दरिया के निवासियों का सामूहिक बध किया

था। तेलुल्ल कबीर के युद्ध में यह क्रान्तिकारी व्यक्ति अंग्रेज़ों द्वारा परास्त किया गया था और फिर वहां से पकड़ कर लंका भेज दिया गया था इसके पूर्व की ओर पब्लिक वाटिकाएँ हैं जिसमें पगडंडी मार्ग पर वृक्षों तथा लताओं के मध्य लोग टहलते हैं और जिनका सुखमय समय व्यतीत करते हैं।

शुक्रवार के दिन इन फ्रांसीसी वाटिकाओं में एक पुरानी मसजिद में शहनाई तथा बैण्ड बजा करता है।

पूर्वी बन्दरगाह

यह बन्दरगाह केटबे के क़िले से आरम्भ होता है। यह क़िला फारोस के प्राचीन द्वीप में स्थित है। यहीं पर पहले सिकन्दरिया का प्रकाशघर स्थित था आज वहीं पर बेतार के तार टेलीग्राफ का स्टेशन है। समस्त तट पर पक्का घाट बना हुआ है। गाड़ियों के चलने के लिये दो सड़कें बनी हैं। संध्या के समय लोग यहां टहलने आते हैं और सौदा बेंचने वाले अपना सामान लेकर बैठते तथा फेरी लगाते हैं। संध्या समय

सिकन्दरिया-दर्शन

नीले और कभी कभी हरे समुद्र की सुन्दरता बड़ी मनमोहिनी प्रतीत होती है।

शीतकाल में कभी कभी समुद्र में तूफान आजाता है और समुद्र की वेगवती लहरें घाट पर आकर टक्कर मारती है जिससे सड़कों को बड़ी हानि पहुँचाती है और घाट का बड़ा नुकसान हो जाता है। घाट की रक्षा करने के लिये म्युनिसिपैलिटी ने फ्रांसीसी कम्पनी की सहायता से ब्रेकवाटर बनाने का प्रबन्ध किया है जिससे घाट की रक्षा हो सके। यह ब्रेकवाटर केटबे क़िले से ही आरम्भ होता है और पूर्व की ओर जाता है। इसके अंत में एक प्रकाश घर बना हुआ है जहां से हरी रोशनी दिखाई जाती है। इस प्रकाश घर से समस्त सिकन्दरिया नगर का सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता है।



फौव्वारेदार चट्टानें

सिकन्दरिया में कुछ चट्टानों के ऊपर फौव्वारे की भांति पृथ्वी के नीचे से उछलता हुआ जल निकलता है। इसका मुख्य कारण यह बतलाया जाता है कि समुद्र भीतर चट्टानों में चला गया है इसलिये जब समुद्र की लहरें आगे की ओर वेग पूर्वक बढ़ती हैं तो जल ऊपर मार्ग पाकर उछलता हुआ निकल पड़ता है जिससे गैसियर उत्पन्न हो जाते हैं।

कुछ साहसी लोगों ने पता लगाया है कि यहां पर ज्वालामुखी पर्वत का पुल है जिसका सम्बन्ध पृथ्वी के भीतर एक २० गज़ लम्बी सुरंग से है। एक कृषि विशेषज्ञ का कहना है कि यह सुरंग मारीयूठ झील से मिली हुई है।

यहां पर तीन चार ज्वालामुखी पर्वतों क्रेटर हैं जिन्हें फव्वारे वाली चट्टानों पर समुद्र की ओर मुख करके खड़े होकर सुगमता पूर्वक देखा जा सकता है।

सिकन्दरिया-दर्शन

ऐंटोनियेडस बाग

पहले यह बाग मोहम्मद अली पाशा का था उसके बाद उसके खानदान वालों के अधिकार में आया। उनसे इसे सर जान ऐंटोनियेडिस ने खरीदा। उनके पुत्र ने इसे म्यूनिसिपैलिटी को दान रूप में दिया जिससे वह इसे सार्वजनिक बाटिका बनावें।

इस बाटिका में प्रवेश करने का मार्ग नौज़ा बाटिका से है। प्रवेश फीस देनी पड़ती है। इस बाग़ का क्षेत्रफल १०० एकर है। यहां पर गरम देशों के विशाल वृक्ष लगे हुये हैं जिनमें रबर आदि के वृक्ष भी हैं।

बाग़ के बाहर पश्चिम की ओर एक मैदान के बीच में प्राचीन क़ब्रस्तान है। जिसका कुछ भाग महमूदिया नहर के जल से जलमग्न हो गया है इसके पास ही एक पहाड़ी है जिस पर झाड़ियां तथा जड़ी बूटियां होती हैं। ऊपर जाने का मार्ग जाडियों के मध्य होकर जाता है। पहाड़ी का दृश्य बड़ा ही सुन्दर है।

मैरियोटिस झील

इसका क्षेत्रफल ५६,००० एकड़ है। यह छिछले पानी की एक झील है। इसका जो भाग सिकन्दरिया के हद में आता है वह महमूदिया नहर के पास पड़ोस और समुद्र तट के समीप का है। मेक्स के समीप इसे मारूट रेलवे पार करती है।

१८०१ ई० में जब बृटिश तथा फ्रांसीसी सेनाओं में युद्ध हो रहा था। सर राल्फ अबेर क्रोम्बो बृटिश सेनाध्यक्ष ने अबोकिर के समीप बांधों को कटवा दिया जिससे समुद्र का पानी भीतर घुस आया जिससे लगभग १५० गांव नष्ट हो गये।

प्राचीन काल में इस झील के कुछ भाग में कृषि होती थी। १६२४ ई० में जब झील में जाल डाल कर छान बीन की गई तो मिट्टी की दो सुराहियां तथा एक शीशे का बर्तन निकला जिससे सिद्ध होता है कि किसी समय में झील वाले स्थान पर बस्ती थी। इस झील को सुखाने का काम जारी है।

मैरियट के जंगली पुष्प

इस स्थान पर बनैले पुष्पों के पौदे असंख्य हैं जिनमें रंग-विरंगे सुगन्धित तथा बिना गंध वाले पुष्प खिला करते हैं। यूँ तो यहां साल भर पुष्प खिलते हैं पर मौसम के समय यहां के पुष्पों का दृश्य बड़ा ही अनोखा होता है।

पुष्पों की ऋतु दिसम्बर मास से आरम्भ होती है और मई के आरम्भ तक रहती है। वर्षा की गति पर ही पुष्पों की ऋतु निर्भर करती है।

क्लोपैट्रा की सुइयां

महारानी क्लोपैट्रा की आज्ञा से क्लोपैट्रा सुइयां अथवा बिल्लौरी-स्तम्भ हलियोपोलिस से लाकर उसी स्थान पर स्थापित किये गये थे जहां अब रामलेह का टर्मिनस स्टेशन है।

१८१६ ई० में मोहम्मद अली पाशा ने इनमें से एक इंगलैंड को और दूसरा अमरीका को पुरस्कार रूप में दे दिया। जो इंगलैंड को दे दिया गया था वह ६८

फुट ६ इंच ऊँचा ७ फुट ७ इंच मोटा और १५० टन भारी था। इसे ले जाने में बड़ी कठिनाई पड़ी थी। अब यह लन्दन के टेम्स नदी के बांध पर स्थापित है। दूसरा स्तम्भ अमरीका चला गया।

रोसेटा

सिकन्दरिया से ४५ मील की दूरी पर नील की पश्चिमी शाखा के बाम तट पर स्थित है। सिकन्दरिया से यहां के लिये प्रतिदिन दो तीन गाड़ियां जाती हैं।

यह स्थान प्राचीन शिलालेखों का केन्द्र सा है। चारों ओर बिल्लोरी तथा संगमरमर पत्थर के स्तम्भ तथा शिलाएँ बिखरे पड़े हैं जो प्राचीन मिस्र की याद दिलाते हैं। रोसेटा शिला जो अब बृटिश म्यूज़ियम में है वह यहीं १७९९ ई० में सेंट जूलियन क़िले में मिली थी। शिला में मिस्र की प्राचीन तसवीर वाली लेख शैली अंकित है।

मिस्री मुद्रा

मिस्री मुद्रा में सब से बड़ा सिक्का पाउन्ड होता है यह स्वर्ण मुद्रा है और १०० दीनार के बराबर होता है मिस्री राष्ट्रीय बैङ्क कई प्रकार के नोट निकालता है।

मिस्र में सोना, चांदी तथा निकिल के सिक्के चलते हैं। चांदी के मुद्रों में सबसे बड़ा मुद्रा २० (लगभग तीन रुपया दो आना) दीनार का होता है। उससे छोटा १० दीनार का उससे छोटा ५ का उससे छोटा २ का और उससे छोटा एक दीनार का होता है डेढ़ पेंस के बराबर होता है। एक दीनार लगभग ६ पैसे का होता है।

इसके अतिरिक्त निकेल के मुद्रा भी होते हैं जो एक दीनार, आधा दीनार, चौथाई दीनार और $\frac{1}{8}$ दीनार के होते हैं। स्वर्ण मुद्रा कम चलते हैं। अधिकतर चांदी और निकेल के मुद्राओं का प्रयोग होता है।

मिस्र की स्वतंत्रता की घोषणा के पश्चात् मिस्री सिक्कों पर बादशाह फाऊद की तसवीर बनी रहती है।

मिस्री भाषा

मिस्र की साधारण जन समाज की भाषा अरबी है फीरोज़ बादशाह के देश के रहने वाले मिस्री, सूदानी और योरुपीय लोगों की जन संख्या एक करोड़ सत्तर लाख है। यह सभी लोग अधिकतर अरबी भाषा का प्रयोग करते हैं साधारण बात चीत में इसी भाषा का प्रयोग होता है।

यदि कोई परदेशी मिस्र जाता है तो उसे दूकान-दारी करने, साधारण लोगों से मिलने, बात चीत करने के लिये उसे अरबी का कुछ न कुछ ज्ञान अवश्य होना चाहिये। यदि परदेशी को अरबी भाषा का ज्ञान बिल्कुल नहीं है तो फिर उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा और हानि होने की बड़ी सम्भावना है। थोड़ी बहुत अरबी जानने वाला मनुष्य भी अपना काम मिस्री, सीरियन, अरबी, यूनानी, आरमेनी, फ्रांसीसी और इटैलियन के बीच अपना काम चला सकता है।

सिकन्दरिया-दर्शन

रीति रिवाज

स्टेशन पर उतरते ही जैसे हमारे देश में कुली मिल जाते हैं ठीक उसी प्रकार मिस्र में भी है। मिस्र में कुलियों को एक बोझे के लिये तीन पैसा (आधा दीनार) देना पड़ता है। यदि किसी प्रकार का लेन देन का झगड़ा हुआ तो उसका निपटारा स्टेशन मास्टर कर देता है। साधारण रूप से कुली लोग पैसे के बड़े प्रेमी होते हैं और छोटे से छोटे गठरी के लिये भी तीन पैसे ले लेते हैं इसलिये चतुर तथा जानकार लोग अपने सामान को इकट्ठा करके एक गट्ठर बना लेते हैं जिससे उन्हें कठिनाई न उठानी पड़े।

यहां दलालों की बड़ी भरमार है और इनका जत्था सब कहीं जाता है। इनकी पहचान करना सरल कार्य नहीं है। यह लोग अपनी कला (दलाली) में बड़े चतुर होते हैं। यात्री को पता भी नहीं लगता कि वह किसी दलाल से बातें कर रहा है या साधारण व्यक्ति से बातें कर रहा है। यह लोग अपनी दलाली सब कहीं रखते हैं और इनसे बचना बड़ा कठिन है। इनको मिस्र के इतिहास, प्राचीन स्थानों

और देखने योग्य प्रत्येक वस्तुओं का ज्ञान तो बहुत नहीं होता पर फिर भी अपनी कला में निपुण होने के कारण यह यात्रियों को धोका देकर पैसे ऐंठ लेने में सफल हो जाते हैं।

बाजार में जहां कहीं भी जाइये और चाहे एक दीनार का सामान खरीदिये अथवा १०० दीनार का आपको अवश्य मिल जायेंगे। यह मीठी मीठी बातें करते हुये आपके साथ दूकान तक चले जायेंगे। बस इनकी दलाली हो गई। दूकानदार इनकी सूरत देखते ही समझ जाता है और फिर यात्री से दुगुना, तिगुना दाम ले लेता है। क्योंकि उसे दलाली चुकानी ज़रूर पड़ती है। दूकानदारों से इनकी दलाली बंधी है और वह समय पाकर उनसे दूकान पर जाकर ले लेते हैं।

इन दलालों का चरित्र अच्छा नहीं होता है। इनमें व्यभिचार बहुत पाया जाता है और बहुधा यह लोग विदेशी स्त्रियों को धोका दे चुके हैं इमसे बदनाम भी हो गये हैं। इसलिये स्त्रियों को चाहिये कि वह इन्हें अपना हाथ स्पर्श भी न करने देवें। सरकार की ओर से इन पर कड़ा प्रबन्ध लगाने के लिये प्रयत्न हो रहा

है। प्रत्येक यात्री को चाहिये कि वह इनके साथ नौकर सा बर्ताव करे जिससे उसे कम से कम हानि पहुँचे।

यहां भांति भांति प्रकार के जुये होते हैं जुये खेलाने के लिये संस्थाएं हैं जिनके सदस्य लोगों को इधर उधर से चकमा देकर ले आते हैं और फँसा कर पैसे ऐंठ लेते हैं। लोगों को पता भी नहीं चल पाता कि जिसके बहकाने से वह जुये में भाग ले रहे हैं वह उस संस्था का सदस्य है अथवा कोई साधारण व्यक्ति है। इसलिये प्रत्येक व्यक्ति को चाहिये कि वह कदापि ऐसे खेलों में भाग न ले।

सिकन्दरिया की सब से बड़ी पुस्तकों की दूकान

सिकन्दरिया की यह केन्द्रीय लाइब्रेरी है। ११ बौले वैड डे रामलेह सड़क पर स्थित है। यह मिस्र में सब से बड़ी अंग्रेज़ी की दूकान है यहां प्रत्येक भांति की पुस्तकें मिल सकती हैं।

यहां दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र, पत्रिकाएं, मेगज़ीनें आदि मिलती हैं। यह बड़ा पुस्तकालय अंग्रेजी तथा अमरीकन, जर्मन, आस्ट्रियन तथा स्विस, हंगेरियन तथा रोमानियन, पेंसिल तथा क़लमें स्वान, वाटरमैन तथा ओनोटो आदि फाउन्टेनपेन, रंगने के सामान कोडक का सामान वार्षिक पुस्तकें प्रत्येक देश की मार्ग प्रदर्शक पुस्तकें, मिस्री वाटर कला फोटो तथा पोस्टकार्ड भंडार, क्रिस्मस तट न्यूइयर्स कार्ड, फैन्सी तथा कामर्शल स्टेशनरी, चमड़े का सामान तथा डायरियां, मिस्र की कला की वस्तुएं आदि आदि विभागों में विभाजित हैं।

इसका नियंत्रण एक अंग्रेज के हाथ में है जो बड़े उदार तथा मिलनसार हैं।



खेलकूद और तमाशे

सिकन्दरिया व्यापारिक केन्द्र है और एक अन्तरराष्ट्रीय नगर है इस कारण यहां प्रत्येक देश के लोग प्रायः व्यापारी रहा करते हैं। उनके आमोद-प्रमोद के लिये नगर में भांति-भांति की संस्थाएँ हैं जिनमें से कुछ यहां दी जाती हैं।

सिकन्दरिया का स्पोर्टिंग क्लब :—यह संस्था अंग्रेज़ी ढंग की है। यहां सदस्यों के लिये गोल्फ टेनिस, पोलो, रगबी, फुटबाल, हाकी, बाउल्स, क्रोकेट आदि के खेलने का प्रबन्ध रहता है।

नगर तथा देहात के नर-नारी इसके सदस्य हो सकते हैं। परदेशी लोग सदस्यों की पहचान से क्लब देख सकते हैं और आठ दिन तक उपयोग कर सकते हैं।

तैराई क्लब :—यह संस्था पश्चिमी बन्दरगाह (पोर्ट अबरी) पर स्थित है। यहां प्रतिदिन लोग तैरने के लिये आते हैं। चाय पानी का प्रबन्ध संस्था में रहता है। इसके अधिकांश सदस्य सिकन्दरिया के धनी घर के लोग हैं।

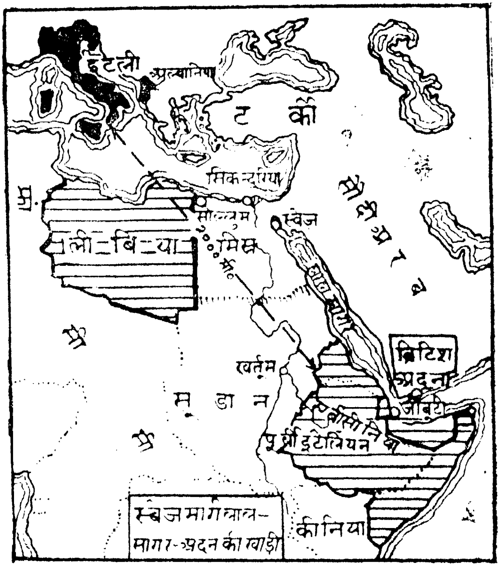
माल्टाई-क्लबः—इसकी स्थापना १९१७ ई० में हुई। मिस्र के रहने वाले प्रत्येक माल्टा निवासी के लिये यह क्लब खुला रहता है। इसका मुख्य ध्येय अपने सदस्यों के बीच भाषा तथा कला कौशल का बढ़ाना है।

वाई० एम० सी० ए०:—यह संस्था स्तम्बूल और सिसोतरिस सड़कों के कोण पर एक बड़े विशाल भवन में स्थित है। यहां लोगों के पढ़ने-लिखने, आमोद-प्रमोद के लिये अलग अलग स्थान बने हैं।

यहां युवा लड़कियों के लिये। एक अन्तर्राष्ट्रीय विभाग भी है जिसमें उनकी शिक्षा आमोद-प्रमोद आदि का प्रबन्ध रहता है।

इस स्थान पर परदेशी लोग सस्ते भाड़े पर ठहर सकते हैं।

इनके अतिरिक्त और भी दूसरी संस्थाएँ सार्व-जनिक सेवा के लिये खुली हैं।


इटली
अल्बानिया
टर्की
सिकन्दरिया
सोल्लूम
स्वेज
मिस्र
लीबिया
खर्तूम
सूडान
ब्रिटिश अदन
जीबूटी
पूर्वी इटेलियन
कीनिया